

शिखरिणी

॥ गलज्जलिकासङ्कलना ॥

पुरोवाक्

v

शिखरिणी

vii

1. मन्दमन्दम्	1
2. दैवज्ञं कं पृच्छेयम्?	4
3. किं ततो भविता?	6
4. शतं धारयेऽहम्	8
5. लक्षयेऽहम्	10
6. देहि मे प्रददामि ते	12
7. ननु कीदृशं जातं पुरम्?	14
8. सैव राजनेतृताऽस्माकम्	16
9. कौशेयवासोभिरूर्णयते	18
10. तैर्विदेशे धनं सञ्चितम्	20
11. त्रुटिर्हन्त जाता	22
12. निरर्थाऽभवत्	24
13. भान्ति ता अनुत्तमाः	26
14. कृतिनोऽभिराजविहगाः	28
15. चातकोऽहम्	32
16. समधिकं सार्थकं मन्ये	34
17. वेपन्ते	36
18. श्रुतं त्वत्तो मया बन्धो!	38
19. स्वीयभालं न भिन्धि	40
20. नो मया निवेद्यन्ते	42
21. तव मानसे किं वर्तते?	44
22. लक्षयेऽहम्	46

(x)

23. कस्मिन् युगेऽस्मि सज्जातः?	48
24. विभाति नदी	50
25. सन्तः कियन्तः?	52
26. वैराग्यनाटकेन	54
27. नमस्तस्मै नमस्तुभ्यम्	56
28. विहितं मया वागर्पणं भोः	58
29. को नु रोद्धुं क्षमः?	60
30. नैव जाने	62
31. तस्मिन्नेव दिवसे	64
32. हन्त सर्वार्थसिद्धम्	66
33. हृच्छूलकरमिह मन्यताम्	68
34. भिषङ् मे भणति	70
35. शारदापादसक्तोऽभवम्	72
36. यो हि तुदादिर्जातः	74
37. रमा सती सावित्री नारी	76
38. मानवो वा पशुर्वा	78
39. पौड़ी	80
40. न मां प्रतिबोधय	82
41. अम्बोपचित्यै	84
42. तद्दातुमम्ब! न शक्नुषे	86
43. तन्मरणमेव वृणे	88
44. नयनं निरश्रु जातम्	90
45. जानाति वृद्धो विधाता	92
46. विज्ञातं मया सम्यक्तया तर्तुम्	94
47. कथमपि न वार्यते	96
48. तेऽपि श्रयन्ते	98
49. सौख्यं ममैतदेव	100
50. न किं प्राणोऽस्मि जातः?	104
51. क इमे जनाः	106
52. सप्रमाणं लोकयध्वम्	108

53. अन्ना हजारे	
54. दलितपुत्री	110
55. निर्बोधं शयिष्ये	112
56. पृच्छतितरां रसिकः	114
57. तूर्णं तरिष्ये	116
58. सीमाऽपि नोऽनिश्चिता	118
59. प्रचण्डखण्डोऽहम्	120
60. अभिराजोऽहं गृद्धः	122
61. शिखरिणी	124
	126